P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

चारण साहित्य में भक्ति एवं सांस्कृतिक काव्य

सारांश

चारण साहित्य का वर्णन चारणों के स्तुतिपरक शक्ति एवं सांस्कृतिक काव्य के बिना अपूर्ण है। चारण काव्य में भक्ति–काव्य की यह परम्परा भक्ति आन्दोलन के समय से ही अपने पूर्ण अवस्था में थी क्योंकि माँ शक्ति तो चारणों की जीवन शैली में है। कुछ चारण कवियों ने अपने स्फुट पदों में ईश्वर का महात्म्य गाया है। तथा कुछ ने भक्ति ग्रन्थों की रचना की है। हर शैली में शिव और शक्ति के साथ कृष्ण और राम की उपासना चारण कवियों का ध्येय रहा है। अपनी इस अराधना शैली में चारणों ने ईश्वर को अपने सम्मुख खड़ा रख कर काव्य रचना की। यही इस स्तुतिपरक काव्य की विशेषता है। प्रायः सभी कवियों ने आलम्बन के महत्व एवं अपनी दीनावस्था का वर्णन किया है। इस काव्य में सदाचार के उद्‌गारों का भी अभाव नहीं परन्तु अपनी कुल–देवियों का स्तुति गान करना तो इन चारणों का प्रथम कर्त्तव्य रहा है। और यह कर्त्तव्य प्रत्येक चारण पूर्ण, निष्ठा भक्ति के साथ हर दिन जीवन के प्रत्येक कार्य में करता है।

मुख्य शब्द : स्तुतिपरक, दीनावस्था, उद्‌गार, उपासना।

कविता पालावत
व्याख्याता,
इतिहास विभाग,
महारानी गर्ल्स पी0 जी0 कालेज, कनवाड़ा

प्रस्तावना

चारण भक्ति रयियिताओं में प्रमुख नाम आते हैं। ईसरदास, माधोदास रामनाथ कविया, सायाझूला, ब्रह्मानन्द, बखतराम, हिंगलाजदान भीखदान, अमरसिंह देपावत, माघवदान उज्ज्वल शिवबख्श, कल्याणदान, सम्मान बाई, आदि अनेक नाम हैं।

ईसरदास कृत 'हरिरस' राजस्थानी में भक्तिपरक ग्रन्थों में परमात्मा की भक्ति तथा उपासना का सरल, एवं सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ है। परब्रह्मा के सगुण रुपावतारों का नानाविघ गुणगान किया है। भक्ति रस के अमृत से सराबोर इस महान् कृति में कम्र, उपासना एवं ज्ञान इन तीनों का समन्वय किया गया है। भक्त के हृदय भक्त जिस प्रकार निवास करता है। उसके विषय में कवि ने कहा है।

खग नीरधीर अन्तर खरा, मद कुंजर वपु जिम मयण मन वसे तेम तू मोहरे, मो मन वासियों महमहण।

इश्वर और उसके विभिन्न अवतार सर्वत्र विराजमान है। ईश्वर से प्रेम के प्रदर्शन का वर्णन कवि ने बड़ा भव्य किया है। कवि का कहना है कि यदि भगवान के आगे कवि सरल, सुबोध एवं स्पष्ट भाषा में बात नहीं करेगा तो किसके आगे करेगा। इसी कारण कवि सीधे शब्दों में उद्‌गार प्रकट करता है जो सीधे हृदय को स्पर्श करते हैं। आत्मा को सचेत करता हुआ कवि बिना किसी प्रयास के राम–नाम लेता रहता है।

राम जपतो रे रुदा, आलम मकर अजाण।
जे तू गुण जाणे नहि पूछे वेद पुराण।।
ज्यो जागे त्या राम जप सुंता राम सभार।
ऊठत बैठत आतमा, चालतां विचार।।

भक्ति की दृष्टि से हर–रस अपने आप में एक पूर्ण रचना है। माधोदास कृत 'राम–रासो' भक्ति का एक वृहद महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। यह प्रबन्ध कोटि का काव्य है। इसमें आदि से लेकर अन्त तक भगवान राम की कथा वर्णित है। कवि ने इसमें मार्मिक स्थलों को भी पहचानने का प्रयत्न किया है। कवि ने सीधे–सरल भाव से राम–भक्ति करी है।

बधि कपि बालि सुग्रीव निवाजै कैकघा ठकुराई
मम बध हीरा अलप साखा मृिग निकुट सलितन कुदाई।

सायां झूला कृत नागदमण एक लघु खण्डकाव्य है। इसमें 'गऊ चारण', एवं 'कालियदमन' नामक लोक–कल्याणकारी एवं लोक–रजनकारी लीलाओं का सरस एवं मौलिक वर्णन किया गया है। कृष्ण की बाल क्रीडाओं एवं विनोदशील नटखट प्रकृति का वर्णन किया गया है।

ददुलार कान्हो चढे बृच्छ डाली,
भरी झंप काली टूहे नाग भाली।
काली नाग सूं कान्ह संभाल केवा,
लघी जंण ऋयो दधीमच्छ।

भक्ति की इस दृष्टि से कवि किसना का 'रघुवर जस प्रकाश' एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। कवि का लक्ष्य भगवान राम का गुणगान करना ही प्रकट होता है। कवि ने भगवान राम का महात्म्य मुक्त रुप से गाया है।

गोह सरीखा पांमर गाऊं,
व्याध कबंधा ग्रीघ बताऊं।
नै सट पापी गौतम नारी,
ते रज पावां भेटत लारी।
द्वेव सदा दीना दुख दाधौ,
रे भण प्राणी भूपत राधौ।

चाहे राम हो या कृष्ण हो दोनों ही इश्वरीय रुप। ऐसा मानकर कतिपय कवियों ने अपने स्फुट पदों में इन दोनों का सम्मिश्रण कर दिया है। इनमें जहाँ कहीं भी ये नाम आये हैं वे परब्रह्मा के द्योतक हैं।

यह लक्ष्य करने की बात है कि चारण भक्त कवियों ने ईश्वर का अर्चन–पूजन मातेश्वरी के रूप में किया है। चारण जगदम्बा को ही आदि शक्ति मानते हैं। चारणों में जगदम्बा के कई भक्त हुये हैं जिन्होंने परमात्मा पर मातृत्व की भावना का आरोपण करके उसके प्रति मार्मिक उद्‌गार प्रकट किये हैं। चारण कवियों ने माँ भगवती के भिन्न–भिन्न स्वरुपों का शक्ति पूजन काव्य में बड़ा सुन्दर चित्रण किया है। माँ भगवती की स्तुति में इसरदास ने 'देवयाण' की रचना की।

ईसरदास महाशक्ति स्वरूपा देवी को ही सृष्टि की कर्ता हरता एवं पालनकर्ता मानते हैं। जगदम्बा कभी मनोहर तो कभी भयंकर, कभी स्नेहि एवं आकर्षक हो तो कभी डरावने रूप में प्रकट होती है। यही आध शक्ति समस्त कार्यों के मूल में है। कर्ता–कर्म और कारण यही महामाया है। यही ईश्वरी ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञानस्वरूपा है।

देवी ज्ञान रै रुप तू, गहन गीता।
देवी कृष्ण रे रूप गीता कपीता।

चारणों ने स्फुट गीतों के रूप में देवी की स्तुति की है। जिन्हें ये चारण 'चिरजा' कहते हैं। ये चिरजा दो प्रकार की होती है – (1) चाडाऊ, (2) सिहाऊ। चाडाऊ चिरजा संकट काल में माँ भगवती को अपनी सहायतार्थ बुलाने के लिए गाई जाती है। चारणों में यह मान्यता है कि चाडाऊ द्वारा माँ भगवती को आह्‌वान करने पर उसे आना ही पड़ता है। 'सिहाऊ' शान्तिकाल में देवी की अराधना में गायी जाती है।

जोधपुर नरेश तख्तसिंह के घोर संकट से घिर जाने पर भोपालदान ने अपनी इष्टदेवी को याद किया।

कलेमर समुद्र लोपे न ऊगे संस्कार घू
चले प्रलेदए जाए घरनी सिमरिया जेजे
किम घाय छै सुन्दरी, जाय छे विरद कर
साथ जनकी।

इसी प्रकार अलवर नरेश बख्तावर सिंह के उदर पीड़ा की शान्त करने के लिए उम्मेदराम ने माँ करणी का आह्‌वान किया –

चूंदू बेगी चाल, चाल खेतल बड़ चारण।
तोको हाथ रसूल, घजाबंध लोवड धारण।।

माँ के प्रचण्ड स्वरुप का रामनाथ ने बड़ा भावपूर्ण चित्रण किया है। सिंह पर आरुढ़ माता जब कुपित होती है। तो वराह की तोट तिरक जाती है और पीठ कडकने लगती है।

बडकै डाढ़ वराह कड़कें पठि कमघ्ठरी
धड़के नागघराह, वाघ चढै जद वीरा घत्थ।

इन भक्ति रचनाओं के अतिरिक्त चारण कपियों कवयित्रियों द्वारा अन्य सांस्कृतिक व मांगलिक कार्यों पर गाये जाने वाले गीतों की रचना की है। जैसे बधाइयाँ, जन्मोत्सव पर व वैवाहिक गीतों की भी रचना की है। इनमें सम्मान बाई कृत विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले मांगलिक गीतों को 'बना' कहते हैं इन गीतों में वर वेश में सुशोभित राम तथा वधू वेश में छविमान जानकी के सौंदर्य का वर्णन किया गया है। समानबाई ने राम–जानकी के ब्रह्मा सौंदर्य के साथ उनके आन्तरिक आहलाद और माधुर्य को भी व्यक्त किया है। इन गीतों में राजस्थानी जन–जीवन की परम्पराएं साकार हो उठी है।

घोड़ी फोर रह्या रघुराई
बनाजी री देख सखी रघुराई

अध्ययन का उद्‌देश्य

चारणों की जीभ पर सरस्वती का निवास है जो सत्य के आग्रह का मर्म बखानती है जिस वंश की देविया संसार की रक्षा करती हैं। सचमुच ही चारणों के मुख में चारों वेद निवास करते हैं। इसी शक्ति आन्दोलन एवं भक्ति आन्दोलन की महान विरासत की अभिव्यक्ति के प्रतीक चारण साहित्य की परम्परा बड़ी समृद्ध है।

इस विषय पर गम्भीरता से सोचना होगा कि इस लोकवाचिक परम्परा को संरक्षित करना है एवं इसकी निरन्तरता आज भी बनाए रखनी है तो इसे प्रदर्शन की वस्तु बनाने की कोई आवश्यकता नहीं है। हमारे यहाँ साहित्य, कला, संगीत नृत्य आदि जीवन का अंग रहे हैं।

निष्कर्ष

राजस्थान का साहित्य चारण शैली की साहितय रचना के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ अनेक प्रसिद्ध कवियों ने श्रेष्ठ कृतियों की रचना कर राजस्थानी साहित्य को सम्पन्न किया है। कवियों के साथ–साथ कवयित्रियों ने भी काव्य की विविध विधाओं भक्ति, शक्ति आदि में उल्लेखनीय साहित्य का सजृन कियाहै। चारण साहित्य के अन्तर्गत डिंगल काव्य अपने मौलिकता एवं विशिष्टता के लिए प्रसिद्ध है। वीर गाथाओं और भक्ति से युक्त यह साहित्य हमारे सांस्कृतिक वैभव का प्रतीक है। चारण शैली में रचित साहित्य में भी व्यक्तियों के परस्पर मधुर सम्बन्धों, अर्थपूर्ण व्यंजना, विशिष्ट प्रतीक, वीर–भावों के साथ भक्ति वात्सल्य एवं श्रृंगार का समावेश, विविध छंदों एवं अलंकारों का प्रयोग तथा भाषा–वैभव देखने योग्य है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. *चारण साहित्य परम्परा, पृ.235.*
2. *चारण साहित्य का इतिहास, मोहन लाल जिज्ञासु, पृ.*
3. *चारण साहित्य सुधा, ब्रदीदान गाडण*
4. *राजस्थानी लोक साहित्य, नाथूराम*
5. *नाग दमण, कल्याण दास गाडण*
6. *समान कंवर, फुटकर काव्य*